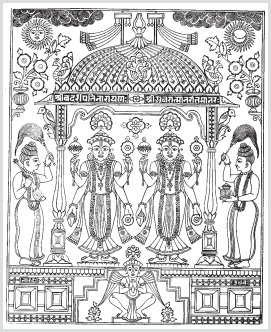

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युझियम
नारणपुरा, अहमदाबाद-३८००१३.
फोन : २७४८९५९७ • फेक्स : २७४१९५९७
९८७९५ ४९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देश में ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ६ अंक : ६४ अगस्त-२०१२

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०२
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०३
०३.	अंकुश तथा अभय मुद्रा श्री घनश्याम महाराजकी	४
०४.	रक्षाबंधन	६
०५.	गुरुपूर्णिमा प्रसंग पर पू. महाराजश्री के आशीर्वचन में से	७
०६.	अन्त:करण का शुद्धिकरण	९
०७.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	११
०८.	सत्संग बालवाटिका	१३
०९.	भक्ति सुधा	१५
१०.	सत्संग समाचार	१९

॥ अस्मदीयम् ॥

जगत के तात किसान-चातक की तरह वरसात की राह देख रहा है । इस वर्ष ज्योतिषी तथा हवामान विभाग ने भविष्यवाणी की थी लेकिन सभी झूठी साबित हुई । अन्त में ईश्वर की इच्छा ही बलवान होती है । अ.मू.स.गु. गोपालानंद स्वामी से हरिभक्तों ने प्रार्थना की कि बरसात के विना सभी फसल सूख रही हैं । वरसात नहीं होगा तो खाने के लाले पड़जायेगे । पशुओं के लिये चारा भी नहीं मिलेगा । पूरा वर्ष कैसे निकलेगा ? तब स्वामीने महाराज को गढपुर के लिए एक पत्र लिखा और उस पत्र में यह निवेदन किया कि हे महाराज ! सारा जगत सूखे की चपेट में है सभी वरसात के अभाव में त्रस्त है, यदि आप वरसात करादेते तो जगत का सारा दुःख दूर हो जाता । महाराज स्वामी का पत्र पढकर तथा स्वामी का वचन है यह विचार कर उन्होंने संकल्प किया कि तुरन्त मुसलाधार वरसात होने लगी । अपने इष्टदेव भगवान कभी किसी के दुःख को नहीं देख सकते ?''कोई ने दुःखियो रे देखी न खमाय दया आणी रे । इस तरह महाराज बहुत दयालु हैं । सभी हरि भक्त गाँव-गाँव में षडाक्षरी महामंत्र ''श्री स्वामिनारायण'' नाम की धुन करना - इससे महाराज मेघराज को अवश्य आज्ञा करेंगे और मेघ टूट पड़ेगे ।

श्रावण मास में अलौकिक झूले में पुरुषोत्तम मास दरम्यान प्रभु का दर्शन होगा । ऐसे दिव्य उत्सवों का दर्शन करके जीव को भगवान के साथ जोड़ करके आत्मकल्याण करलेना चाहिये ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(जुलाई-२०१२)

१. प.भ. नटवरभाई मणीलाल सांकलचंद पटेल के यहाँ पदार्पण, सोजागाँव।

३. गुरु पूर्णिमा-देश विभाग के हजारों संत हरिभक्तों द्वारा गुरु पूजन धूमधाम से संपन्न हुआ।

१३. प.पू. १०८ श्री लालजी महाराजश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का १५ वाँ प्रागट्योत्सव अपने अध्यक्ष स्थान पर धूमधाम से संपन्न किये।

१५. विजापुर गाँव में तथा न्यु राणीप में सत्संग सभा प्रसंग पर पदार्पण।

२१. माणसा गाँव में सत्संग शिबिर प्रसंग पर पदार्पण।

२४. कांकरिया श्री स्वामिनारायण मंदिर पारायण प्रसंग पर पदार्पण।

२४. जुलाई से १६ अगस्त तक अमेरिका आटलान्टा श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण तथा प्रसिद्ध कच्छ सत्संग सभा टोरेन्टो केनेडा श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण वहाँ से मोम्बासा कच्छ सत्संग श्री स्वामिनारायण मंदिर बाल युवक मंडल के रजत जयंती म[illegible] प्रसंग पर पदार्पण।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(जुलाई-२०१२)

१३. अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में ''श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में १५ वाँ प्रागट्योत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा पूजनीय ब्रह्मनिष्ठ सन्तो तथा धर्मकुल प्रेमी हरिभक्तों की उपस्थिति में धूमधाम से संपन्न किये।

१३. से २७. जुलाई अमेरिका में बोस्टन में बाल सत्संग युवा केम्प प्रसंग पर तथा सत्संग प्रचारका पदार्पण।

टोरडा के भुवनेश्वर मंदिर में प.पू. श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने पूजन-अर्चन किया

भिलोडा तहसील के टोरडा गाँव में भुवनेश्वर महादेव के मंदिर में ता. १९-७-१२ को प.पू. बड़े महाराजश्री ने पूजन अर्चन किया था। स्वामिनारायण संप्रदाय के गोपालानंद स्वामीने गणेश भगवान को लड्डु खिलाया था। यहाँ पर एक विशाल विषपर नाग का भी उन्होंने मोक्ष किया था। ये सभी संप्रदाय में सत्य घटना है। इस सन्दर्भ में कालुपूर मंदिर के ६ट्ठे गादीपति प.पू. बड़े महाराजश्रीने भुवनेश्वर महादेव मंदिर में शिवलिंग पर जलाभिषेक किया था। ऐसी यहाँ पर मान्यता है कि यहाँ के मंदिर में पूजा-अर्चन करने से वर्ष अच्छा जाता है। स्वास्थ भी अच्छा रहता है। प.पू. बड़े महाराजश्री के आगमन के समय स्वामी कृष्णप्रसाददासजी तथा अन्य संत सत्संगी उपस्थित थे। इसके अलांवा प.पू. बड़े महाराजश्री यहाँ के मंदिर में भी पूजन अर्चन किया था।

(भास्कर न्युज, भिलोडा)

अंकुश तथा अभय मुद्रा श्री घनश्याम महाराजकी

साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुर धाम)

अपने संप्रदाय में श्रीघनश्याम महाराज की प्रतिष्ठा सर्व प्रथम संवत् १९४२ में (१२६) वर्ष पूर्व अमदावाद में भगवान स्वामिनारायण का जहाँ निवास स्थान था ऐसे रंगमहल में की गयी । इसके बाद अन्य मंदिरों में काष्ट की धातु की मार्बल की तथा अन्य रुपों में भी की जाने लगी ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालूपुर के रंगमहल में विराजमान श्री घनश्याम महाराजने अपने प्रत्येक अंगो का दिव्यरुप से दर्शन देकर करीब छ मास में इस मूर्ति की पूर्णता करवाई थी । श्रीहरिके मनुष्य देह की सम्पूर्ण प्रतिकृति तथा अक्षरधाम में विराजमान सर्वावतारी का मूल स्वरुप दोनो का एक जैसा है भेद नहीं है । भेद न होने में कारण यह है कि शिल्पकार जब बड़ोदा में प्रभु का रुप निर्माण कर रहा था उस समय जब भी उसे द्विविधा होती तब प्रभु स्वयं आकर उस द्विविधा को दूर करते । शिल्पकारने प्रत्यक्ष उस स्वरुप का अन्तर अवलोकन करके ही यह रुप दिया है.

इस मूर्ति के बाद संप्रदाय में अनेकों मूर्ति निर्मित हुई । लेकिन इस मूर्ति की प्रतिकृति कोई नही कर सका । मंदिरो में विराजमान स्वरुपों के ऐश्वर्य में कोई भेद नहीं होता लेकिन अक्षरधाम की झांकी तो मात्र रंगमहोल के घनश्याम महाराज में हैं । इसमें ब्रह्मादिक भी शंका नहीं कर सकते । सम्पूर्ण संप्रदाय इस तात को स्वीकार करता है । ध्यान करने के लिये संत-हरि भक्त इसी स्वरुप को पसन्द करते हैं ।

मुक्तिदाता जगत के आधार सदा सत्य, सदाद्विभुज धारण करने वाले श्री घनश्याम महाराज दाहिने हाथ में अंकुश मुद्रा धारण करते हैं और बायें हाथ में अभयदान मुद्रा धारण करते हैं ।

वेदो में मुद्रा के विषय में खूब लिखा गया है । आदि काल से मुद्राओं द्वारा वार्तालाप अथवा विचार का आदान-प्रदान या विभक्त किया जाता रहा है । आज विशेषरुप से शब्द (भाषा) से वार्तालाप होता है । इससे प्राचीन प्रथा मुद्रा विज्ञान की शरीर द्वारा की जानेवाली मुद्रा से एक विशेष प्रकार का वाईब्रेशन होता है, एक विशेष प्रकार का वातावरण बन जाता है । ऐसी उसमें से एक ऊर्जा निकलती है कि सामने वाला व्यक्ति प्रभावित हो जाता है । ऐसी मुद्रा का प्रभाव हजारों-लाखों माइल तक रहता है । इसका प्रभाव केवल मनुष्य तक ही नहीं बल्कि, तत्तद् सम्बन्धित देवी देवता तक पहुंचता है । अपनी शरीर में एक ब्रह्मांड होता है वहीं शक्ति है । उस शक्ति का प्रदर्शन मुद्रा द्वारा करके व्यक्ताव्यक्त दोनों स्वरुपों का किया

जाता है। वाणी तो उसके सामने कुछ भी नहीं है। परंतु मुद्रा एक ऐसा श्रेष्ठ आधार है कि असामान्य व्यक्ति को भी प्रभावित कर सकता है । जिस तरह पूजा में विविधप्रकार की मुद्रा का विधान किया गया है, उन उन मुद्राओं से देवी-देवताओं का उपचार निवेदन किया जाता है । इसका प्रभाव मंत्र से भी अधिक प्रभाव शाली है । वेदकहते है कि नैवेद्य अर्पण करते समय प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा सामानाय स्वाहा इस पांच प्रकार की अलग-अलग मुद्रा द्वारा नैवेद्य अर्पण करना चाहिये।

श्री घनश्याम महाराज के दाहिने हाथ में अंकुश मुद्रा है - यह मुद्रा प्रभु के सर्वोपरिता का परिचायक है। ऐसा अर्थ मुद्रा शास्त्र के आधार पर किया गया है।

बायें हाथ में अभयदान की मुद्रा है। इस मुद्रा से दर्शनार्थी को अभयदान का वचन मिलता है । दर्शनार्थी को रक्षण पालन का अभयदान मिलता है। जो भी प्रभु की शरण में आता है वह इस अभय मुद्रा का दर्शन करके निर्भय हो जाता है। काल-माया-कर्म के बन्धन से वह मुक्त हो जाता है। जो सर्वकारण का कारण मानेगा उसकी सर्वविधरक्षा होगी। इस प्रकार की प्रभु के हाथ की मुद्रा स्पष्ट होती है । हाथ तथा अंगुलियों की स्थिति शास्त्र प्रयाणानुसार है। श्रीहरि अपने समय में ही नारायणजी पेइनटर तथा स.गु. आधारानंद स्वामी द्वारा जिन प्रसादी की मूर्तियों का निर्माण करवाया वे सभी मूर्तियां दिव्य शक्तियो व्यक्त करती है। भगवान श्रीकृष्ण के हाथ में वांसुरी तथा त्रिभंगी मुंद्रा भी भक्ताधीनपना को व्यक्त करती है। जो मुद्रा राधा की तरफ झुकी हुई है वह यह विदित करती है कि मैं भक्ताधीन हूँ। भक्तों को अपने समान बनाता हूँ।

श्रीराम चतुर्भुज मुद्रा में भक्तों को अधर्म तथा असत्य से रक्षण करते हैं। सदाशिव ध्यानमुद्रा में सदा दर्शन देते हैं। जिससे महायोगी-त्यागी के लक्षण के साथ त्रिशुल से संहारक शंक्ति प्रगट होती है । हनुमानजी के हाथ में गदा की मुद्रा भक्तों के रक्षण को प्रगट करती है। पर्वत हाथ में होने से भगवान राम की सेवा में तत्पर तथा भक्तों के रक्षण में तत्पर प्रगट होता है। शनि को पैर के नीचे दबाये हुये हैं। इससे उनके कष्टभंजनपना का दर्शन होता है।

इसी तरह सभी देवी दवेताओं की मुद्रा किसी न किसी भाव को प्रगट करती रहती है। गणपतिजी की विशेषता-बड़ा मस्तक विशाल बुद्धि का परिचायक है। नाक लम्बी - प्रतिष्ठा की परिचायक पेट बड़ा-विशाल दिल का परिचायक । वाहन मूषक - स्वावलम्बी तथा सतत प्रयत्नशील-स्वयं का मार्ग बनाने का परिचायक। आंख छोटी - सूक्ष्म दृष्टि का परिचायक।

वर्तमान समय में कितने पेइन्टर - शिल्पी - मनः कल्पित भगवान की मूर्ति बनाते रहते हैं जिनका शास्त्रों में कोई प्रमाण ही नहीं मिलता। जिसका कोई अर्थ नहीं होता। विपरीत अभिव्यक्ति से विपरीत असर होती है। वेद मंत्रगान करते समय उसकी एक विशिष्ट मुद्रा होती है । बिना मुद्रा के वेदमंत्र पाठ अपूर्ण या अशुद्ध कहा जाता है।

भगवान के साथ सेवक के स्वरुप में राधा, लक्ष्मी, भक्तिमाता आदि स्वरुप सेवकपना की परिचायक हैं हाथ की मुद्रा से सेवा करने की मुद्रा हैं। मुद्रा की तरह व्यवहार में भी इशारों से सभी लोग अपना काम करते हैं। कहावत भी है - समझदार के लिये इशारा काफी।

रक्षाबंधन

- साधु घनश्यामप्रकाशदास (माणसा)

''उत्सव प्रियाः खलु मानवाः'' सामाजिक प्राणी होने के कारण मानव सम्बन्धो के सीकड़ से बंधा हुआ है । जीवन जीने का इस परस्पर के संबंधो से मधुर होकर झरता रहता है । इसलिये मुनियों ने प्रसंगानुसार उत्सवों का आयोजन करके जीवन रुपी उद्यानमें उत्सवों की फुलवारी बनाकर आनंदरुपी क्यारियों से दुःख भरी दुनियां में सुखी की सुगन्धफैलाया है । उसमें भी चातुरमास के समय श्रावणी पूनम तो भाई बहन के प्यार के अनमोल बन्धन को जोड़ने के लिये आपहुंची है । रक्षाबंधन के पर्व को पूरे वर्ष भर चातक दृष्टि से प्रतीक्षा करते रहते हैं । आदिकाल से मनाई जाने वाली श्रावणी पूनम एक ऐतिहासिक पर्व से जुड़ा हुआ है ।

वामन अवतार में गुरु शुक्राचार्य की अवरोधक शिक्षा से न रुकने वाले बली राजा ने याचक के रुप में आये हुयें वामन भगवान को तीन पग भूमि का दान जैसे ही कृष्णार्पण किये कि तुरंत प्रभु वानम रुप से विराट रुप धारण कर लिये जिससे एक पग से पूरी पृथ्वी, दूसरे पग से आकाश सहित समग्र स्वर्ग लोक, तीसरे पग से बलि के मस्तक को स्पर्श किया और उसे पाताल भेंज दिया । फिर भी राजा बलि को लेश मात्र ग्लानि नहीं हुई बल्कि, गद्‌गद् स्वर से प्रभु के चरण में गिरकर क्षमा याचना करने लगा । उसकी दीन भरी विन्ती सुनकर प्रभु ने कहा कि तुम वरदान मांगो, यह सुनते ही उस असुर राजा ने भगवान से वरदान मांगा कि आप हमें हमारी आंखो के सामने नित्य दर्शन देते रहिये । उसी समय भगवान राजाबलि के बचन में बंधकर खड़े रह गये । आज युगो वीत गया स्वयं एक रुप में यहाँ रहते हुये भी अनेको अवतार धारण करके जगत की रक्षा करते रहे । कृष्ण के अवतार में रुक्मिणी के रुप में लक्ष्मीजी को एक विचार आया । इस भक्त के बंन्धन से मुक्त कराने का एक ही रास्ता है । इसके हाथ में रक्षा (राखी) बांधना । अब वे स्वधाम से पाताललोक में राजा बलिके पास आई और उसे राखी बांधी । राखी के बदले बहन (लक्ष्मी) से मांगने को कहा, बहनने तुरंत भगवान को बन्धन से मुक्त करने की बात की और उसी समय बलिने भगवान को वहाँ से मुक्त करदिया ।

आंज का यह पर्व बन्धन बांधकर बन्धन से मुक्त का रहस्य समझाता है । श्रीमद् भागवत अथवा महाभारत में यह प्रसंग आता है माता कुंती अभिमन्यु को अमर राखी बांधी । निर्बल लोग सबल को आत्मरक्षार्थ रक्षा सूत्र बांधते हैं । बडे लोग अपने छोटे को बांधते हैं । रक्षा बंधन किसी जाति विशेष के लिये नहीं है, सभी धर्म के लोग इसे मानते हैं । उनके मानने का तरीका अलग भले हो । हिन्दू गले में कंठी धारण करते हैं । जब कि जैन लोग वास्केप लेकर रक्षा की पोटली के रुप में सद्‌गुरु की कृपा दृष्टि स्वीकार करते हैं । मुस्लिम ताविज के रुप में मौलवी के पास बंधवाते हैं । शिष्य गुरु के पास रक्षार्थ बंधवाते हैं । भक्त भगवान का आश्रय प्राप्त करने के लिये कंठी धारण करते हैं । ग.म. के ९ वें वचनामृत में परमहंस भगवान के स्वरुप का वर्णन करते हुये लिखते हैं कि सं. १८७८ श्रावण शुक्ल-१४ को श्री सहजानंदजी महाराज दादा खाचर के दरबार में विराजमान थे, उस समय आनंदानंद स्वामी ने महाराज की पूजा की थी । महाराज ने नानाविधवस्त्रालंकारो को धारण किया था । सभा में नाना देश से संत-हरिभक्त उपस्थित थे सभी महाराज को रक्षाबन्धन कर रहे थे । महाराज ने सभी से कहा, सर्वधर्मान परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।

अनुसंधान पेज नं. ८

गुरुपूर्णिमा प्रसंग पर पू. महाराजश्री के आशीर्वचन में से

संकलन : गोरधनभाई बी. सीतापरा - हीरावाडी - जूनागढ़

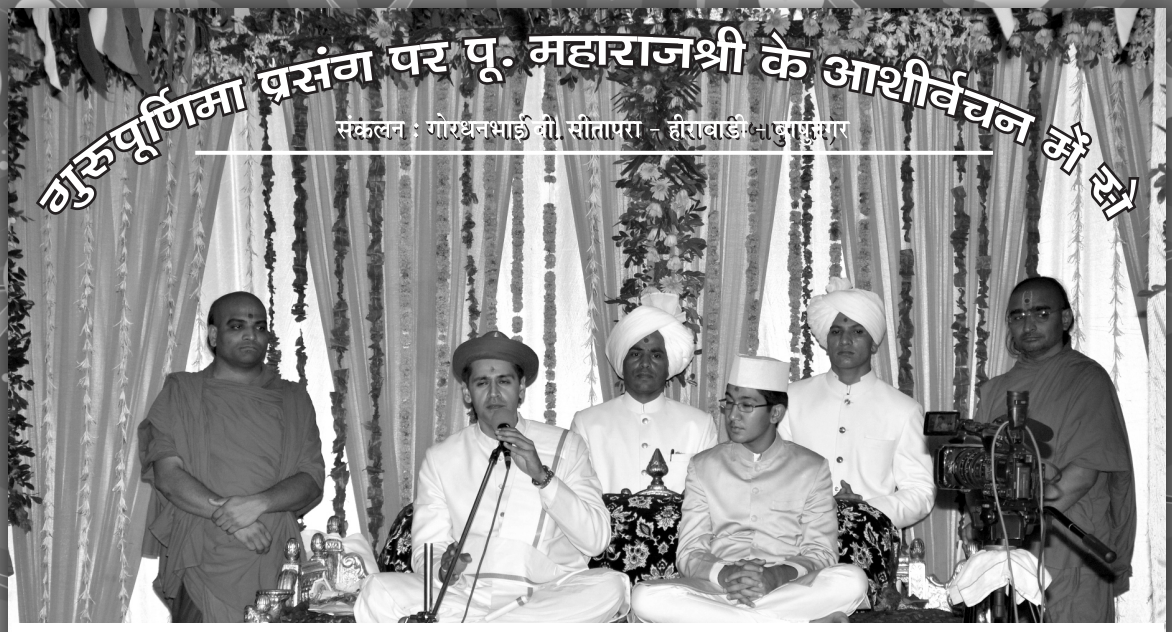

हमें जो नरनारायणदेव मिले है, उन्हीं को अपने बाहों में भरकर श्रीहरिने अहमदाबाद के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प्रथम प्रतिष्ठित किया। अन्य मंदिरों में भी प्रतिष्ठा महाराज ने ही किया है, परन्तु इस मंदिर में स्वयं अपनी बाहों में भरकर प्रतिष्ठित किया हैं। इसकी पुष्टि शास्त्रों में मिलती है। महाराज ने स्वंय कहा है कि हममे तथा श्री नरनारायणदेव में थोड़ा भी अन्तर नहीं है।

महाराजने वचनामृत में कहा है कि सर्व साधन में कौन ऐसा साधन है जिसमें अन्य सभी साधन अपने आप समाविष्ट हो जाते हैं। इसके उत्तर में महाराज ने कहा कि भगवान का दृढ आश्रय हो तो सभी अन्य साधन उसी में समाविष्ट हो जाते हैं। हम सभी देव के आसरे बैठे है इसलिये सुखी हैं। आश्रय छोड़ने पर कौड़ी की कीमत हो जायेगी। अन्यत्र प्रारम्भ में बहुत अच्छा लगता है क्योंकि वहाँ जगमगाहट आकर्षण का केन्द्र होता है। बाद में जगमगाहट खत्म होते ही सब कुछ पहले जैसे हो जाता है। वहाँ पर विशेष स्वतंत्रता भी होती है। जैसे मन में आवे वैसा वर्तन कर सकते हैं। वहाँ पर प्रारंभ में ऐसा भी होगा आपका खूब स्वागत होगा, खूब प्रतिष्ठा होगी - इससे आपका मनलुभा आयेगा और लक्ष्य रहित हो जायेंगे। अपना लक्ष्य तो मूलभूत प्रभु के बताये मार्ग पर चनला - इसीसे अक्षरधाम की प्राप्ति सम्भव है - अन्यथा भटकना ही पड़ेगा। वह एकमात्र आश्रय है प्रभु श्री नरनारायणदेव के चरण की शरण अन्यत्र यह कहाँ सम्भवन है - मात्र भटकना ही है। व्यक्तिगत हमारी कोई कीमत नहीं है। आचार्य कोई व्यक्ति नही, परंतु महाराज द्वारा प्रतिष्ठित एक स्थान है। इस स्थान की कीमत है। इस स्थान पर सात आचार्य हुये सभी ने अपने अपने ढंग से सत्संग का कार्य किया।

दत्तात्रेय भगवानने २४ गुरु किया। प्रत्येक के पास गुण ग्रहण किया। आज समय ऐसा आगया है कि शिष्य की अपेक्षा गुरु की संख्या बढ गयी है। एक शिष्य के भाग में तीन गुरु आते हैं। एक वात सुनने लायक है - एक बार कोई विलायत से बनारस आया। वहाँ पर बहुत सारे मन्दिर को देखा, बहुत सारे सन्तों से मिला। एक महात्मा को देखा तो पूरी शरीर को गले तक जमीन में गाड़ कर रहते थे। कोई वृक्ष की डाल पर रहते थे। कोई मस्तक नीचे करके रहते। कोई मस्तक नीचे करके हाथ से चलते। कितने तो अन्न त्याग

करके रहते । कितने के लम्बे बाल तो कोई नग्न । इन सभी को मानने वाले उनके बहुत सारे शिष्य थे ।

कितने के पीछे ४००० हजार तो कितने के पीछे १००० शिष्य अगल-बगल बैठे रहते । यह सब देखकर वह यूरोपियन नदी के किनारे धूमने निकला । वहाँ एक मनुष्य को देखा, देखते ही वह उसके पास गया । उसके मुख की आभा देखकर आकृष्ट हुआ था । उस के पास कोई शिष्य नहीं था और नहीं कोई आडम्बर । विदेशी वह व्यक्ति भारत के एक सच्चे व्यक्ति को पहचान लिया । इसी तरह हमें भी अन्तर्दृष्टि की आवश्यकता है । हमे आडम्बर का त्याग कर, बनावटीपना का त्याग कर, इधर उधर भटकने का त्याग कर, अपने दोषो को त्याग कर, अपने स्वभाव में परिवर्तन लाकर महाराजकी आज्ञा में वर्तन करना चाहिये ।

हम सभी एक परिवार के हैं । नरनारायणदेव अपने बाप है । इसलिये अन्दर की ईर्ष्या का त्याग करके एक सूत्र में पिरोजाना चाहिये । वचनामृत में बात आती हैं । महाराज कहते हैं । भगवान के भक्त आपस में ईर्ष्या न करें । आनंदानंद स्वामीने कहा हे महाराज ! ईर्ष्या तो रहती है । यह सुनकर महाराजने नारद और तुंबरु का उदाहरण देते हुये कहा कि ईर्ष्या करनी हो तो नारदजी की तरह करनी चाहिये । नारदजी तुंबरु के पास जाकर गान विद्या सीखे और भगवान को प्रसन्न किये । इसी तरह एक दूसरे से ज्ञान सीखना चाहिये । दूसरे के गुण को ग्रहण करना चाहिये और अपने अवगुण का परित्याग करना चाहिये । किसी दूसरे के दोष का आविष्करण नहीं करना चाहिये ।

श्रीजी महाराजने खूब परिश्रम करके इस संप्रदाय की रचना की थी । संत तथा हमारे आचार्य एवं बडे-बडे हरिभक्त खूब पुरुषार्थ करके सत्संग को प्रकाशित किया है । इसी तरह आगे भी करना है । आप लोगों के पुरुषार्थ को देखकर हमें आनंद होता है । सत्संग की व्यापकता दिन प्रतिदिन बढती जा रही है । जिस तरह हनुमानजी शरीर का व्याप करते हैं और पूंछ उसी अनुपात में स्वयं बढती जाती है । लेकिन हमें पूंछ पकड़ने की जरुरत नहीं हैा । स्वामीने (पू.पी.पी. स्वा. नारायणघाट महंतने) कहा कि नरनारायदेव का पिछले ३-४ वर्ष से दान-भेंट बढता ही जा रहा है । कितने लोग तो ऐसा भी कहते हैं कि देव को क्या कमी ? हम तो ऐसा कहते है कि देव जैसा कोई देव नहीं है जिसे महाराज स्वयं प्रतिष्ठित किये हैं । देव का बैलेन्स तो रहेगा ही न ? जिसे देखना हो आकर देख ले, हमारे पास कारभारी बैठे हैं । हरिभक्तों के पैसे से मात्र श्री नरनारायणदेव के मंदिर का जिर्णोध्धार नहीं करते, परंतु इस देव के विभाग में आये हुए सभी मंदिरों का जिर्णोद्धार करते हैं । इसमें सभी का सहयोग है । भगवान सभी का भला करें ऐसी नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना ।

अनुसंधान पेज नं. ६ के

रक्षाबंधन

अहंत्वा सर्वायापेभ्यो, मोक्षयिष्यामि मा शुचः । आप सभी लोग सभी धर्म का या सभी आश्रय का त्याग करलो मेरी शरण में आयेगा उसी की मैं हर तरीके से रक्षा करुंगा । गीता में एक और श्लोक इस तरह भगवानने कहा है -

''स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्''

जिस में भगवान का बल है, जो एकांतिक भक्त है वही पक्का सत्संगी है ।

आदि काल से रक्षाबंधन का त्यौहार मनाया जाता है । हाथ में बांधी गयी रक्षा पोटली आज एक इतिहास बनकर सामने आयी और एक परम्परा बन गयी । परिणामतः सभी ने स्वीकार किया चाहे वह किसी तबके का क्यों न हो । इसमें भगवान से लेकर सामान्य तक सभी समाविष्ट हुये । इसका आनन्द आज सभी में बराबर का हिस्सा हो गया । ऐसा ही आगे भी चलता रहे । हरि के हाथ में बांधा हुआ रक्षा सभी के लिये कल्याण कारक बने ।

अन्त:करण का शुद्धिकरण

- रमेश पी. पटेल (डांगरवावाला)

सर्व प्रथम अन्त:करण क्या है ? अन्त:करण किससे बना है । इस विषय में जानना जरुरी है । सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान की अमृतवाणी अर्थात् वचनामृत-गढडा प्रथम के १२ वें वचनामृत में श्रीजी महाराजने पुरुष, प्रकृति, काल, महत्तत्वादिक २४ तत्वों की विस्तृत जानकारी दी है। अन्त:करण अर्थात् २४ महत्तत्वादिक तत्वो में चार तत्व - १. मन, २ बुद्धि, ३. चित्त, ४. अहंकार इन चार तत्वों से अन्त:करण बना है।

मन : मन की व्याख्या यह है कि विचारों का एकत्री करण । मन में अनेकों विचार क्षण क्षण में आते रहते हैं। मन विचार करने में थकता नहीं है। मन से ही अच्छा-खराब विचार आता है। विचार सर्जन का मूल है। जैसा विचार करेंगे वैसा सर्जन होगा।

बुद्धि : निश्चय करने का कार्य बुद्धि का है । (निश्चययात्मिका बुद्धि:) समग्र इन्द्रियों के विषय में जो ज्ञान होता है वह बुद्धि तत्व को होता है।

चित्त : चित्त का मतलब मेमरी भंडार, याद रखने की शक्ति, चिपक जाना इत्यादि चित्त के कार्य है।

अहंकार : सादी भाषा में कहा जाय तो अहं ममत्व की भावना को ही अहंकार कहते हैं। मैं और तू (तेरा) इत्यादि जिसमें आवे वह अहंकार का द्योतक है।

हम सभी लोग दैनिक जीवन में शारीरिक शुद्धि के लिये स्नानादि किया करते हैं। परिणामत: शरीर शुद्ध देखावदार बनाने का जितना रात दिन प्रयास होता है उतना प्रयास अन्त:करण की शुद्धि में रखें तो बहुत सारें परिणाम साध्य हो जाय। जिस तरह बाह्य शरीर की शुद्धि के लिये नहाने का साबुन, पानी, अनेक प्रकार के अद्यतन साधन का प्रयोग करते हैं। इतना अन्त:करण के लिये किया जाय वहीं ठीक है । अन्त:करण की शुद्धि किस तरह करनी चाहिये ? इसकी शुद्धि के लिये आजकल के विज्ञान युग में भी ऐसा कोई केमिकल नहीं बना या ऐसी कोई मशीनरी नहीं बनी कि जो अन्त:करण को शुद्ध कर सके।

परंतु श्रीजी महाराज द्वारा बनाई गयी व्यवस्था का आचरण करने से अन्त:करण शुद्ध हो सकता है।

इसके लिये सर्व प्रकार मन को वश में करना पड़ेगा। मन बड़ा चंचल है। उसके गति की कोई मर्यादा नहीं है। इसकी गति को रोकने से ही मन कन्ट्रोल में रहेगा । जो मन को जीतलिया वह सब कुछ जीत लिया। उसके लिये सर्व प्रथम आहार शुद्धि आवश्यक है । इसके लिये शुद्ध - सात्विक आहार लेना चाहिये । श्रीहरि इसी लिये बाहर के आहार को खाने के लिये मना किये हैं। जैसा खाय अन्न वैसा बने मन। आहार शुद्धि से विचार शुद्धि होती है। विचार शुद्धि से मन शुद्ध होता है।

श्रीहरिने मन को कन्ट्रोल करने के लिये तथा अन्त:करण की शुद्धि के लिये ध्यानयोग की सरल उपाय अहमदाबाद के वचनामृत में बताया है । उस तरह से ध्यान करने से मन केन्द्रित होता है। मन के बाद बुद्धि का नम्बर आता है। बुद्धि के बल से आत्मज्ञान होता है। परम तत्व की प्राप्ति होती है। दृढ निष्ठा बनती है । परमात्मा स्वामिनारायण की दिव्य लीला तथा उनके चरित्र को ब्रह्मादिक देव भी नहीं समझ सके। वेद भी नेतिनेति करते हैं। तो हम सभी के बुद्धि की क्या गति है। लेकिन परमात्मा की दिव्य लीला का ज्ञान या अज्ञान से भी कभी शंका नहीं करना चाहिये।

चित्त का उपयोग भगवान के सम्बन्धो के साथ रखना

चाहिये । अहंकार त्रिगुणात्मक है । भूत मात्र, इन्द्रियो, अन्तकरण, देवता तथा प्राण की उत्पत्ति का कारण है । अहंकार अन्तःशत्रुओं में एक महान शत्रु है । जो मोक्ष के मार्ग में सदा के लिये बाधा रुप है । जिस तरह हम हाथों के नख को प्रति सप्ताह काटते हैं उसी तरह अहंकार बढ न सके इसका ध्यान रखकर सतत जागरुक होकर उसे काटते रहना चाहिये । इसके लिये यह विचार करना चाहिये कि मैं कौन हूं ? मैं सत्संगी हूँ ।

अपनी शरीर में दश इन्द्रियां है - श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, रसना, प्राण, वाक्, पाणी, पाद, वायु, उपस्थ । जिस में पांच ज्ञानेन्द्रियां है और पांच कर्मेन्द्रियां है । इग्यारहवां मन है । इन सभी को एक साथ यदि भगवान में लगाया जाय तो आत्यन्तिक सुख की प्राप्ति होगी । मूर्ति का ध्यान करते समय मन को उसी मूर्ति में लगा देना चाहिये । इससे भी अन्तःकरण शुद्ध होता है ।

सर्वोपरि भगवान स्वामिनारायण की दिव्य मूर्ति का ध्यान करने से दिव्य शांति की अनुभूति होने लगती है ।

इसके साथ ही अन्तःकरण की शुद्धि का सतत ध्यान रखना चाहिये । ब्रह्मानंद स्वामी ने कीर्तन में लिखा है कि ''संत समामग कीजे हो निशदिन संत समामग कीजे ।''

इस तरह प्रतिदिन मन को चिन्तन के द्वारा स्वस्थ रखना चाहिये । सन्त समामग से तथा आध्यात्मिक चिन्तन से मन को स्वस्थ रखा जा सकता है ।

भगवान के निरन्तर चिन्तन, से निदिध्यासन से मन को वश में किया जा सकता है यह भी मन के शोधन का एक प्रयास है । इसीसे भगवद्भक्ति की प्राप्ति सम्भव है ।

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस

shreeswaminarayan9@gmail.com

नीचेके महामंदिरोमें नित्य दर्शन के लिये

जेतलपुर : **www.jetalpurdarshan.com**
छपैया : : **www.chhapaiya.com**
महेसाणा : **www.mahesanadarshan.org**
टोरडा : **www.gopallalji.com**
नारायणघाट : **www.narayanghat.com**
वडनगर : **www.vadnagar.com**

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट

www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in

भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० ● शृंगार आरती ८-०५ ● राजभोग आरती १०-१० ● संध्या आरती १९-३० ● शयन आरती २०-३०

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

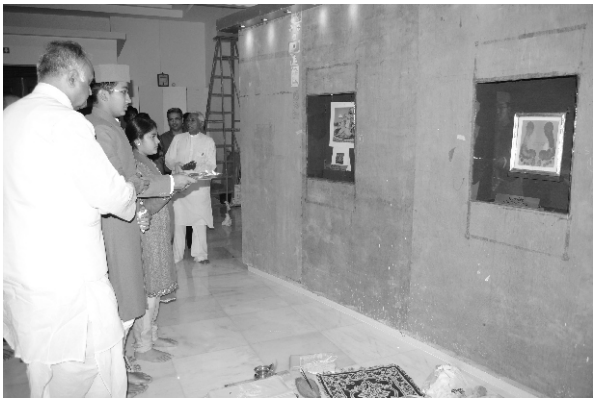

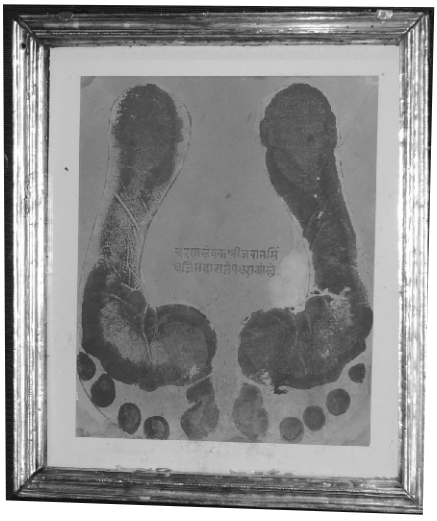

धरमपुर की कुशल कुंवरबा के कुंवर के पगड़ी के कपड़े के ऊपर एक साथ ४० जोड चरणारविंद का चिन्ह देकर श्रीजी महाराजने चरणारविंद देने का शुभारंभ किया था । उपरोक्त श्रीजी महाराज का चरणारविंद ईडर के राजा जवानसिंहने ईडर मंदिर में प्रतिष्ठित किया, जो आज श्री स्वामिनारायण म्युजियम के हाल नं. १ में रखा गया है । म्युजियम में रखी हुई वस्तुओं की शुभ शुरुआत प.पू. लालजी महाराजश्री तथा प.पू. श्री राजा के वरद् हाथों से इस चरणारविंद से हुई थी ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में दान - जुलाई-२०१२

- ●१,००,०००/- पुराणी हरिस्वरुपदासजी गुरु शास्त्री हरिश्चन्द्रप्रकाशदासजी, अमदावाद
- ● २६,०००/- रामभाई अम्बालाल पटेल परिवार - गांधीनगर कृते शांताबहन, गीराबहन, पुष्पाबहन, सुरेखाबहन, रणुकाबहन, अर्चना, मानसी, हर्ष, आलाप, कृणाल, ग्रहा
- ● १५,५५५/- अ.नि. एम. एल. भालजा साहब मंडल, अमदावाद
- ● ११,१११/- अ.नि. कान्ताबहन के स्मरणार्थ, अमदावाद
- ● ११,०००/- धीरजभाई करशनभाई पटेल, धरमपुर
- ● ११,०००/- सुरेन्द्रभाई शाह (एसन्न विन्डो एन्ड डोर) मुंबई
- ● ११,०००/- पटेल पूनमभाई मगनभाई, अमदावाद
- ● ११,०००/- कंकुबहन धरमदास, डांगरवा
- ● १०,०००/- पूनमभाई एम. पटेल, अमदावाद
- ● ५,५००/- चावडा राजेन्द्रसिंह भीखाजी मफाजी, बिलोदरा
- ● ५,००१/- प्रतापभाई जे. परमार, अमदावाद
- ● ५,००१/- चौहाण मनजीभाई करशनभाई, बोटाद
- ● ५,००१/- निलय व्योमेशभाई शाह, घाटलोडिया
- ● ५,०००/- मंजुलाबहन कन्हैयालाल पटेल, नवावाडज
- ● ५,०००/- घनश्याम इन्जियरींग इन्डस्ट्रीझ, बोपल वती मीना केजोफी
- ● ५,०००/- अंबालाल करशनभाई पटेल, कडी कृते अल्पेशभाई

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा । महाभिषेक लिरवाने के लिए संपर्क कीजिए ।
म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६
www.swaminarayanmuseum.org/com ● email:swaminarayanmuseum@gmail.com

अभिप्राय

म्युजियम प्रवेश करने के साथ ही अन्तर में शान्ति का अनुभव होने लगता है। ऐसा लगता है कि अक्षरधाम में महाराज के समीप प्रवेश कर रहे हों। मन में आनंद की उमंग उठने लगती है। आंख में से आनंद के आंशु बह निकलते हैं। जीवन की धन्यता का अनुभव होने लगता है। महाराजश्री का जितना आभार माने उनता कम है। जितना हमे दिव्य दर्शन का सुख दिया है वही पूर्णता है।

(सां.यो. कंचनबा तथा सां.यो. कुंदनबा, मेडा)

अक्षरधाम कैसा है यह अनुभव इस शरीर से संभव नहीं है फिर भी यहाँ आने पर एसा लगा कि अक्षरधाम ऐसा ही होगा।

(पा. कान्तिभाई भगत, उमरेठ)

प्राचीन तथा पवित्र प्रसादी की वस्तुओं के रखरखाव की पद्धति अद्यतन सुविधाओं से सुसज्ज है। इन प्रसादी की वस्तुओं का दर्शन करने से मन में अद्‌भुत शान्ति का अनुभव होता है। इस दर्शन में परमात्मा के दर्शन की अनुभूति होती है। यह अनुभूति म्युजियम बनाने वाले प.पू. महाराजश्री को हुई होगी तभी तो यह म्युजियम बना।

(राजशेखर चंद्र - जैन मुनि)

अनेक जीवात्माओं के कल्याण के लिये स्वयं स्वामिनारायण भगवानने लौकिक वस्तुओं का स्पर्श करके मोक्षदायी बना दिये। ऐसी पवित्र वस्तुओं के दर्शन मात्र से अन्तर में बहुत शान्ति मिलती है। प.पू. बड़े महाराजश्रीने सोने में सुगन्धका काम किया है। म्युजियम में प्रायः प्रसादी की वस्तुयें है। इन सभी प्रसादी की वस्तुओं का रख रखाव - साफ सुफी का काम अद्यतन पैटर्न पर किया गया है। जिसे देखकर बहुत आनंद होता है।

(हरिप्रकाश शास्त्री, वडताल)

I feel even three hours spent in the museum were not sufficient to grasp the details of each of the exhibit displayed. The smallest of the details in the project in not over looked. The labour put in by Pujya Mota Maharajshri, has achieved something which cannot be repeated in future. I believe, Mota Maharajshri, guided in the shadow of Bhagwan Swaminarayan.

- Surendra Shah, Mumbai

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायणदेव के अभिषेक की सूची (जुलाई-२०१२)

ता. १ शामजी वेलजी पींडोरीया, सुंदरभाई करसन हीराणी (कच्छ-भुज) वर्तमान में लंडन, मंजु बहन कांति वेकरिया, कृते प्रेमजीभाई रामजीभाई

ता. १५ करशनभाई के. राघवाणी परिवार, अमदावाद

ता. २१ हरिशभाई एच. सोनी गांधीनगर कृते सरोजबहन सोनी

ता. २२ अमित मुलजीभाई चौधरी, माणेकपुर

ता. २९ राणीप सत्संग मंडल

सत्संगबालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

ताजे गुण की मिठाश

(शा. हरिप्रियदास - गांधीनगर)

स्वर्ग से भी अधिक अक्षरधाम की तरह छपैयाधाम है । पहली प्रभात का समय, सूर्यनारायण भगवान अपनी चादर धरा ऊपर फैलाने की तैयारी कर रहे हैं । प्रफुल्लित तथा आह्लादक वातावरण है । नीर सरोवर, नारायण सरोवर तथा गायघाट का नीर खड़खड़ाते हुये बह रहा है । प्रत्येक घर में प्रातः) गीत गाया जाता हो, मक्खन, दही मथा जाता हो मथते समय मथानी में से घर घर की आवाज आती हो, वह आवाज जैसे भैरवी राग को प्रगट करती हो, ऐसे सुन्दर वातावरण में कोने में सोजाना किसे अच्छा लगेगा ? किसी को भी नहीं । उसी समय घनश्याम महाराज के घर में भक्तिमाता प्रातः काल में दाल दरते हुये गीत गाती जा रही हैं । यह सुनकर घनश्याम महाराज निद्रा त्यागकर खड़े हो गये ।

इसके बाद प्रातः कृत्य करके माता-पिता को प्रणाम करते हैं । बाद में पिताजी के पास बैठकर शास्त्रों का अभ्यास करते हैं । इसके बाद अपने बाल सखा के साथ खेलने की आज्ञा माता-पिता से मांग कर खेलने जाते हैं । बड़े आनंद के साथ माता-पिता उन्हे अनुमति भी देते हैं और यह शिखामण भी देते हैं कि बचाकर खेलना कहीं चोट न लगे । घनश्याम महाराज कहते हैं कि ठीक है ऐसा ही करेंगे । घर से बाहर ज्यों निकले कि उनके बाल सखा उनकी प्रतिक्षा करके खड़े थे । प्रभु को देखते ही कहने लगे कि किधर खेलने जाना है । आप लोग कहिये, आप लोगों को किसका घर याद आता है ?''मामा'' का... हाँ ऐसा घनश्याम महाराज ने

कहा, देखो मित्रों ! अपने मौली मामा का घर यहाँ से नजदीक है। यह सुना है कि उनके यहाँ गन्ना अच्छा हुआ है। गुण पकाने का भी काम चल रहा है। वहाँ चलें तो कैसा रहेगा ? सभी बाल मित्र एक साथ बोल उठे वहाँ चलते हैं। मामा के खेत में ताजा रस पीने का आनंद आयेगा। उसी समय एक मित्र बोला देर क्यों करते हो। हमारे मुंह में तो पानी आ रहा है। चलो जल्दी पहुँच जाते हैं।

इस तरह घनश्याम महाराज तथा बाल मित्रों की मंडली निकल पड़ी। उसमें घनश्याम महाराज के बाल सखा वेणी ने कहा घनश्यामजी वहाँ जाते समय पहले सूरजा मामी का घर आता है। सभी लोग सूरजा मामी के घर पहुँच गये। मामी घनश्याम महाराज की तथा अन्य की आवभगत की। सभी मिलकर वहाँ क्या सुन्दर सेवा कीं इसी की चर्चा करते हुये चले जा रहे थे। इतने मे मामा का खेत आ गया। बाल मित्रों का धैर्य नहीं रहा। सभी वहा पहुंच गये जहाँ पर गन्ना पेराजारहा था। गुण पकाया जा रहा था। उसी की सुगंधचारो तरफ फैल रही थी। सभी गुण खाने के लिये अधीर हो रहे थे।

फटाफट कोल्हू में से निकलते ताजे रस को पीने लगे। लेकिन घनश्याम महाराज तो इसको छूये तक नहीं। गन्ने को लेकर उसे धोकर चूसने लगे। वह इस लिये कि घनश्याम महाराज को यह पता था कि गन्ने को चूसने से विशेष फायदा होता है। तैयार रस पीने से फायदा नहीं होता। मित्र खूब छककर रस पीये। बड़े आनंद में आकर घनश्याम महाराज की प्रशंसा करने लगे। और यह कहने लगे कि आपकी देन है कि ताजा रस मिला।

दोपहर हो गया था। सभी गरमी से परेशान होकर घनश्याम महाराज से कहने लगे। चलिये मानसरोवर के पास वहाँ एक महुआ का विशाल वृक्ष है उसीके नीचे बैठकर आराम करेंगे। सभी वहाँ पहुँचे, वहाँ एक विशाल नाग को देखकर सभी डर गये। घनश्यामजी ? देखिये सामने विशाल नाग है, उसे देखकर भी घनश्याम डरे नहीं, वे तो निर्भय की मूर्ति है। मित्रों को आश्वासन दिये और महुआ के पास स्थित नाग के पास पहुँचे कि वह नाग उनके पैर में लिपट गया और मनुष्य शरीर धारण करके प्रार्थना करने लगा।

याद है घनश्यामजी ? कृष्णावतार में यमुना की धारा में मैं अपनी पत्नियों के साथ रहता था। उस समय में आपके सामने हुआ था। उस अपराधके कारण मेरा मोक्ष नहीं हुआ अब आप कृपा करके मेरा मोक्ष कर दीजिये। उसकी प्रार्थना सुनकर दयालु परमात्मा ने उसके ऊपर दया करके उस योनि से मुक्त करके स्वधाम में भेंज दिया। मित्रों ! आप सभी को इस बाल चरित्र से अवश्य प्रेरणा मिलेगी। आप लोग भी माता पिता की आज्ञा में रहेगे तो अवश्य घनश्याम महाराज आपको गन्ने का रस पिलायेंगे और रक्षा करेंगे, इससे जीवन आनंदमय बन जायेगा।

नूतन प्रकाश : श्री ब्रह्मानंद पदावलि

श्री स्वामिनारायण भगवानने स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी को वचन दिया था कि "आपका रचा हुआ १०० कीर्तन जो प्रतिदिन गायेगा उसे हम दर्शन देंगे।

इसलिये श्रद्धावान भक्तों को गाने में सरलता रहेइस हेतु से शास्त्री हरिकेशवदासजीने ब्रह्मानंद काव्य में से १०८ पद इस पुस्तिका में संग्रहीत किया है।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की उपस्थिति में प.पू. लालजी महाराजश्री के पवित्र जन्मोत्सव प्रसंग पर इस पुस्तिका का उन्हीं के करकमलों में अर्पण किया था। यह पुस्तिका अहमदाबाद साहित्य केन्द्र से मिलती है।

भक्ति सुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से "अपेक्षा मात्र परमात्मा से रखनी चाहिये"

(संकलन : कोटक वर्षा-नटवरलाल - घोडासर)

आज नियम की एकादशी है । इस दिन नियम लेने की महाराजने आज्ञा की है । नियम ऐसा लेना चाहिये कि जिसमें श्रद्धा हो और चार महीने तक सरलता से पालन किया जा सके । नियम के समय राग-द्वेष-ईर्ष्या नहीं रखनी चाहिये । इन अवगुणों से जीवन पर्यंत दूर रहना चाहिये । विशेषरुप से अहंकार को इन नियमों के भीतर आने देना नहीं चाहिये । क्योंकि अपेक्षा से उपेक्षा का भय रहता है । उपेक्षा का अर्थ है अनादर-ईर्ष्या निंदा, अहंकार यह सब अपेक्षा से उत्पन्न होता है । अपेक्षा अपनी एक नजर भावि की तरफ भी रखती है । प्रत्येक व्यक्ति को जीवन जीने की इच्छा तो रहती ही है । कारण यह कि यदि किसी को इच्छा ही नहीं रहेगी तो जीवन का कोई प्रयोजन ही नही रहेगा । जब व्यक्ति की इच्छा पूर्ण नहीं होती तो उसकी श्रद्धा परमात्मा से हट जाती है । जीवन में नकारात्मक विचार आने लगते हैं । इच्छा पूर्ण होने पर लालच भी आने लगती है ऐसा न हो इसके लिये क्या करना चाहिये ? तो महाराज से ऐसी प्रार्थना करनी चाहिये कि हे महाराज जो कुछ हो रहा है वह आपकी इच्छा से हो रहा है ।

इच्छा भूत-भविष्य दोनो तरफ होती है । भूत काल में मैं आपको कोई अनादर किया हो तो उसे भूलते नहीं भविष्य में जब मोका मिलता है तब उसका अपमान करने में चूकते नहीं । उसी समय संयम रखने की जरुरत है । इससे प्रेम शक्ति बढेगी और परमात्मा की तरफ गति होगी । जीवन में शान्ति का अनुभव होगा । अपने में शान्ति नही है मात्र यही इच्छा होती है कि जो मैं सोच रहा हूँ वहीं ठीक है । न होने पर दुःखी होते हैं । यही भावना मन से निकल जाय तो मानसिक शान्ति जीवन आयेगी ।

अपने दुःख को मात्र महाराज से कहना है । आज प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में इतना व्यस्त है कि आपकी वात सुनने के लिये उसके पास समय नहीं है । ८०% प्रतिशत लोग सुनने के लिये तैयार है तो भी उन्हें कुछ पडी नहीं हैं । १०% प्रतिशत ऐसे लोग है जो कुछ करने के लिये प्रयत्न ही नहीं करते । इसलिये आप अपने घर में महाराज के सिंहासन के पास बैठकर उन्हें ही अपना रोना कहिये । इससे आप का दुःख हल्का हो जायेगा । परमात्मा के पास जाने का मतलब त्रिगुणातीत होना । अर्थात् सत्व-रज-तम से रहित होकर ही परमात्मा के पास अपना दुःख कहना चाहिये । त्रिगुणातीत व्यक्ति सुख दुःख में समान स्थिति का हो जाता है । इसलिये प्रभु निष्ठा रखकर उन्हीं की करफ बढने का प्रयत्न करना चाहिये । सत्वगुण से भी पर हो जाने से बंधन नहीं रहता है । इसके लिये सात्विक भाव का वातावरण बनाना पडेगा । सात्विक कार्य ही करना होगा । सात्विक कार्य करते रहने से धीरे-धीरे अहंकार खत्म होने लगता है । यह जगत अज्ञानी मनुष्यो से भरा हुआ है । प्रत्येक मनुष्य में कोई न कोई तो दुर्गुण होता है । सर्वगुण सम्पन्न तो एक मात्र परमात्मा ही है । इसलिये उसी परमात्मा की कथा सुनकर उसे ही अपने जीवन में उतारना चाहिये । आत्मचिन्तन करते रहना चाहिये । इससे आत्मशान्ति मिलेगी । आत्मचिन्तन करते रहना चाहिये की हमारे में कहाँ दोष है, कहाँ कमी है । इसी

लिये तो सत्संग हैं। सत्संग में मन लगाने से सारे दुर्गुण निकल जायेंगे। चातुर मास में नियमपूर्वक कथा श्रवण करने की शक्ति प्रभु आप सभी को दें ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना।

●

नीच सेवा मिले तो भाग्य समझना

– सां.यो. कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

श्री स्वामिनारायण संप्रदाय के मूल में सेवा-भक्ति की चर्चा की गयी है। सेवक बनने में सुख मिलता है। शिरताज होने में सुख नहीं मिलता। बालू (रेती) में चीनी गिर जाय तो उसे हाथी अलग नहीं कर सकता लेकिन चींटी उसे बड़ी सरलता से अलग करे लेती है। ठीक यही स्थिति छोटे-बड़े में हैं। माया का आवरण भेद कर ही अक्षरधाम की प्राप्ति सम्भव है। समाज में बड़ा होना ठीक है लेकिन भगवान के सामने या सन्त के सामने अपने से बड़े के सामने गुरु के सामने सेवक बनने में ही मजा है। सेवक वृत्ति तो विरल में ही होती है।

भगवान की आरती के समय बजने वाला बड़ा घन्टा दूर ही होता है लेकिन छोटी घन्टी तो पुजारी के हाथ में होती है। अन्नकूट का महाप्रसाद तो वर्ष में एकाधबार भगवान के सामने भोग के रुप में प्रस्तुत होता है जब कि थाली का भोग तो रोज लगता है। इसलिये छोटे रहने में जो मजा है बड़े बनने में नहीं।

किसी चक्रवर्ती राजा के गद्दी पर कोई कैसे बैठ सकता है। लेकिन जब राजा की सेवा चाकरी करनी होती है तब नाऊ राजा की गद्दी पर बैठ जाता है और बड़ी सरलता से उनके मस्तक को दबाता है। सेवक की सेवकाई इसी में है शान्ति और आनंद भी इसी में है। विनम्र सेवक बनकर भगवान स्वामिनारायण की सेवा में रतनजी बापू तथा पार्षद मियांजी मुस्लिम सदा तत्पर रहते थे। इतना ही नहीं श्रीहरि ने वचनामृत में इनका उल्लेख करते हुये लिखा कि किसी को भक्ति करनी हो तो रतनजी बापू की तरह या पार्षद मियांजी मुस्लिम की तरह करनी चाहिये। सेवा करने का ही प्रभाव जो वचनामृत में स्थान प्राप्त किया।

सूरत का कोतवाल श्री अरदेश पारसी भगवान स्वामिनारायण का धूमधाम के साथ स्वागत किया था। इससे महाराज प्रसन्न होकर कुछ मांगने को कहे तो उसने दासानुदास रहने को मांगा। यह विनम्रता भरी हुई वाणी सुनकर महाराज अपने मस्तक की पगड़ी उसके मस्तक पर रख दिये। यह माहात्म्य सेवक बने विना कैसे सम्भव है।

पंचाला के दरबर झीणाभाई स्वयं समर्थ थे। दूसरे से सेवा करवा सकते थे। फिर भी बांझा कमलशीभाई की विमारी जानकर उन्हें अपने घर लाये और स्वयं सेवा करने लगे। ऐसी नम्रता देखकर सहजानंद स्वामी उनके अन्तिम समय में स्वयं लेने आये और उनकी शैया को अपने कन्धे पर रखकर ले गयें। यही सेवक बनने में फायदा है।

''वंदु सहजानंद रस रुप अनुपम सारने रे लोल'' इस पद के अन्तिम चरण में ''देजो दान दासने रे लोल'' यह भाव भक्त के मन में प्रगट होना चाहिये तभी प्रभु की कृपा वरसती है। मुक्तानन्द स्वामी ने भी कहा है कि ''हुं टळ्ये हरि ढुकडा ते टणाये दास रे''। जब तक अहं हटेगा नहीं तब तक दासत्व आ नहीं सकता। मुक्तानदं स्वामीने सेवा में ही भाग्य माना है। यह सेवा ब्रह्मादिक देवों को लभ्य नहीं है। भक्तों की सेवा से बड़ा कोई पुण्य नहीं है. इनके द्रोह से बड़ा कोई पाप नहीं हैं। संतो की सेवा में पूर्णकाम समझना चाहिये।

बडताल में बड़ा उत्सव हो रहा ता। उसी समय

कारियाणी में १८ संत विमार पड़ गये। उन संतो की सेवा के लिये कौन रुकेगा ? यह सुनते ही गुणातीतानंद स्वामी ने कहा मैं सेवा में जाऊँगा। महाराज उन्हें संत की सेवा में भेंजे। वहाँ उनकी भोजन बनाने से लेकर कपड़ा सफाई वर्तन माजना, स्नान कराना इत्यादि सभी प्रकार की सेवा करके वहीं पड़े रहे। इधर महाराज वडताल का उत्सव पूर्ण होते ही कारियाणी स्वामी को जाकर गले लगा लिये। यह सेवा का फल था। सेवा से प्रभु प्रसन्न होते है। ऐसा अवसर मिले तो छोडना नही चाहिये। बड़ा बनने से अच्छा छोटा बनना। क्योंकि सेवा का अवसर मिलेगा। और सभी सुख शान्ति उसी में है। प्रभु इसी में समाये हुये हैं। सेवा भक्ति श्रेष्ठ है।

•

शाबाश जोगी शाबाश

– सां.यो. चंद्रिकाबहन गुरु कोकिलाबा
(लींबडी)

एक समय महाराज अहमदाबाद पधारे हुये थे। उस समय नाथ भक्त वडोदरा थे। वे मूलत: अहमदाबाद के थे। वे भी उत्सव में आये थे। महाराज को निमन्त्रण दिये और साथ में सन्तों को भी निमन्त्रण दिये अपने घर पर बड़ी श्रद्धा के साथ सभी को भोजन करवाये। बाद में महाराज अपने निवास स्थान पर गये। जहाँ आज रंग महल में घनश्याम महाराज विराजमान है। उसी समय निष्कुलानंद स्वामी महाराज का दर्शन करने आये। चरणवन्दना करके सन्मुख बैठे। थोड़ी देर बाद कुछ भक्त आये महाराज को सोना मोहर की भेंट दिये। वही मुट्ठी बन्द करके महाराजने निष्कुलानन्द से कहा कि यह मुखवास है आप मुख खोलिये आपके मुख में डालना है। लेकिन स्वामीने कहा महाराज मुख में नहीं मेरे हाथ में दीजिये। यह प्रक्रिया बहुत देर तक चलती रही – बीच-बीच में सन्त-हरिभक्त आते रहे प्रणाम करके बैठते गये। एक सभाका रुप हो गया। उसी बीच ब्रह्मानंद स्वामी आते हैं और निष्कुलानंद स्वामी से कहते हैं कि जोगीराज ? महाराज आप को जहर नहीं दे रहे हैं – ले लीजिये। निष्कुलानंद स्वामीने कहा हम मना नहीं कर रहे हैं लेकिन मुख में न दे कर हाथ में दे तो लेंगे। यह सुनकर मुक्तानंद स्वामीने कहा कि हम जोगी हठ, बाल हठ, स्त्री हठ, घोडाहठ इत्यादि सुने है लेकिन हरि हठ तो कभी नही सुने। इसलिये महाराज आप हठ छोड़कर मुट्ठी खोल कर हाथ में दीजिये तो स्वामी ले लेंगे। यह सुनकर महाराज हाथ खोले तो हाथ में सोना मोहर थी। उसे देखर स्वामीने महाराज से कहा कि तमे ज्यारे द्रव्य ने धूल मां दटावी तेना माथे अमोने झाडे कराव्या त्यारे मायाये आवी हाथ जोडी तमोने कह्यु के हे प्रभु तमे तो मारा ऊपर बहु करी'' उस समय आपने कहा कि ''तारो लाग आवे त्यारे तुं संतो ना मुख मां झाडो करजे'' यह सुनकर महाराजने कहा ''शाबास निष्कुलानंद स्वामी शाबाश, शाबाश जोगी शाबाश'' हम आपकी परीक्षा लेना चाहते थे उसमें आप उत्तीर्ण हो गये। स्वामीने कहा कि महाराज हमारा प्रारब्धभले जैसा हो लेकिन स्वयं स्त्री-द्रव्य से हम दूर ही रहेंगे। उस समय महाराज प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिये कि आपका प्रारब्धभी आपको ढंक नहीं सकता। ऐसे थे वैराग्यमूर्ति निष्कुलानंद स्वामी।

•

सुख दु:ख की असर कभी नहीं होती

– पल्लवीबहन विजयकुमार (लांधणज)

सुख-दु:ख का प्रसंग तो आते जाते रहेंगे। सामान्य व्यक्ति के जीवन में तो होता ही है लेकिन सन्तों के जीवन में भी सुख दु:ख के प्रसंग आते हैं। जीव पाप पुण्य दोनो

को लेकर आता है। पाप-पुण्य दोनो को भोगना पड़ता है। पुण्य का फल सुख है - पाप का फल दुःख है। अनुकूल समय आता है तो समझना चाहिये के पुण्य भोगने का समय आया है। इसी तरह प्रतिकूल समय के फल को समझ लेना चाहिये। संतो का दुःख तो हमसे अधिक होता है लेकिन मन पर असर नहीं होती।

नरसिंह महेता का युवान लडका मरजाता है लेकिन उनके मन पर कोई असर नहीं हुई। अति दुःख में भी सन्तका मन शान्त होता है। पत्नी के दिवंगत होने के बाद महेताजीने लिखा कि "अच्छा हो गया भांगाजंजाल, सुख से भजेंगे श्री गोपाल"। ऐसे दुःख में भी वे शांत रस में रहते थे। प्रभुमय जीवन था। संसार के विषयों से बहुत दूर थे। इसलिये उन्हें दुःख नहीं होता था।

ज्ञानी महापुरुष लौकिक सुख को ही दुःख मानते हैं। सुख में भगवान भूल जाते हैं। जो सुख दुःख में समान स्थिति में रहता है वही परमात्मा को प्राप्त कर सकता है। सुख दुःख मन को होता है आत्मा को नहीं होता। मन भक्ति में लगा रहे तो भी सुख दुःख की असर नहीं होती।

होस्पिटल में डॉक्टर जिस भाग का आपरेशन करते हैं वहाँ पर शुन्न करने के लिये दवा लगाते है। जिससे वह अंग बधिर हो जाता है। उस अंग के काटने पर भी खबर नहीं पड़ती। उसी तरह मन पर भी असर नहीं होती। इसी तरह मन प्रभु में तरबोर हो तो मन के ऊपर सुख दुःख की असर नहीं होती।

श्री नरनारायणदेव धार्मिक परीक्षा के विषय में

श्री नरनारायणदेव धार्मिक शिक्षण विभाग द्वारा आयौजन आगामी परीक्षा ता. २३-१२-२०१२ को रविवार प्रातः ९ से १२ को पूर्व आयोजित केन्द्रो पर ली जायेगी। बाल मंडल के संचालको ने अपने-अपने मंडल के नामों की स्मरणावली तत्काल भेज दे। जहाँ जहाँ बच्चो की शिबिर हुई हो उस गाँव अथवा शहर-ग्राम्य विस्तार में बाल मंडल की स्थापना कर के परीक्षा में बैठने की व्यवस्था कर उनके नामों की लिस्ट को भेजा जाय।

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद सभा मंडल, ओफिस समय ५-३० से १०-३०।

आज्ञा से, संचालकश्री,
देवाणी रणछोडभाई बी. पटेल

अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर टोरडा में परम्परागत आषाढी तोल से पूरा वर्ष अच्छा रहने का योग

टोरडा के स्वामिनारायण मंदिर में प्रति वर्ष आषाढ शुक्ल-१५ को रात्रि में भगवान के वस्त्र में धान्य की पोटली बांधी जाती है जिसे सोनी के यहाँ तौलकर पंचो की हाजिरी में घड़े में बन्द किया जाता है। दूसरे दिन अर्थात् आषाढ कृष्ण-१ को प्रातः पंचो के सामने खोला जाता है और तोला जाता है। उसके कम बेसी होने पर वर्ष फल को बताया जाता है। यह परंपरा आज भी चालू है। आगे भी यह परंपरा चालू रहेगी। इस वर्ष टोरडा मंदिर के गोपाल लालजी हरिकृष्ण महाराज के समक्ष महंत स्वामी कृष्णप्रसादजी के साथ अन्य संत तथा किसान हरिभक्तों की उपस्थिति में १ मकई तोले जाने पर तीन कन बढ गयी। गोहू १० कण कम। बाजरी तीन कठण अधिक। चना पांच कण कम। उर्दी ७ कण अधिक। मूग बराबर। कपास चार कण अधिक। धान ८ कण अधिक। लाल मिट्टी दो कण अधिक। काली मिट्टी तीन कण कम। इस तरह धान्य तथा मिट्टी के नाप में अधिक माप आने से इस वर्ष फसल अच्छी रहेगी। वरसात भी अच्छा रहेगा।

सत्संग समाचार

अहमदाबाद मंदिर में गुरुपूर्णिमा महोत्सव धूमधाम से मनाया गया

हमारे इष्टदेव सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवानने हमारे संप्रदाय की अलौकिक परंपरा प्रस्थापित की है। उनके दोनो भाई बड़े भाई रामप्रतापजी महाराज के पुत्र अयोध्याप्रसादजी महाराज तथा छोटे भाई श्री ईच्छारामजी के पुत्र श्री रघुवीरजी महाराज को गोद लेकर दो गादी स्थानों की स्थापना की । तथा समस्त त्यागी-गृही के आचार्य धर्मगुरु के स्वरुप में अपने स्थान पर प्रस्थापित किया। उस परंपरा के अनुसार प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री वर्तमान में विद्यमान है। इस वर्ष आषाढ शुक्ल पक्ष-१५ को ता. ३-७-२०१२ मंगलवार के शुभ दिन प्रात: ८-०० मंदिर में पधारे तब भव्य संगीत मंगलय सुरों के साथ हरिभक्तों ने स्वागत किया। प्रत्येक वर्ष गुरुपूर्णिमा आषाढ शुग्ल पक्ष-१५ के शुभ दिवस पर अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में देश-विदेश के ब्रह्मनिष्ठ संत तथा धर्मकुल प्रेमी हरिभक्त भारतीय संस्कृति वेद परंपरागत रुप से गुरुपूजन करते है। श्रीहरि के दोनो अपर स्वरुपों ने श्री नरनारायणदेव की श्रृंगार आरती उतारकर सभा में पधारे थे। विद्वान पंडितो द्वारा स्वस्तिवाचन के बाद शास्त्रोक्त विधिपूर्वक पूजन-अर्चन किया गया था। उसके बाद गुरु पूर्णिमा के यजमान अ.सौ. क्रिष्णाबहन नविनभाई मांडलीया (मोरबी) ह. प्रतीकभाई एन. मांडलीया तथा क्रिष्णा डायमंड (दुबई) दर्शा; कौशिकभाई झवेरी आदि परिवारोंने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री का पूजन-अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया।

सभा में महंत स्वामी स.गु. शा. हरिकृष्णदासजी, पू. शा.स्वा. निर्गुणदासजी, ब्र.स्वा. वासुदेवानंदजी, स.गु. स्वा. देवप्रकाशदासजी, स्वा. नारायणवल्लभदासजी, स्वा. गुरुप्रसाददासजी, स्वा. धर्मस्वरुपदासजी, स्वा. सत्संगभूषणदासजी, स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी इत्यादि संतोने गुरुपूर्णिमा के अवसर पर महाराजश्री का पूजन-अर्चन किया था। इसके बाद स्कीम कमेटी के सदस्य श्री दशरथभाई, श्री रतिभाई, श्री जी.के. पटेल, श्री रमणभाई, डॉ. के.के. पटेल तथा कारभारी मनिषभाई ने भी समूह आरती करके पूजन किया था।

बाद में पू. महंत स्वामीने तथा पू. निर्गुणदास स्वामीने गुरु की महिमा का वर्णन किया था। देश-विदेश से लाखो हरिभक्त गुरुपूजन करके चरण स्पर्श के लिये कतारबद्ध खड़े रहे।

इस प्रसंग पर को.पार्षद दिगम्बर भगतके मार्गदर्शन में जे.के. स्वामी, बलदेव स्वामी, नटु स्वामी, इत्यादि संतो ने सुन्दर व्यवस्था की थी। श्री नरनारायण युवक मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी। -शा.स्वा. नारायणमुनिदास

प.पू. भावि आचार्य श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के १५ वें प्रागट्योत्सव को धूमधाम से मनाया गया था

श्री नरनारायणदेव गादी के आठवें आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के १५ वें प्रागट्योत्सव को ता. १३-७-१२ को श्री स्वामिनारायण मंदिर के विशाल सभा मंडप में धूमधाम से मनाया गया था।

प्रात: ८-०० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री का आगमन हुआ उस समय ढोल नगारे के सुन्दर मधुर आवाज के साथ संतो-हरिभक्तों द्वारा स्वागत किया गया था। तीनो अपर स्वरुपों ने श्री नरनारायणदेव की आरती उतारकर सभा में विराजमान हुये थे। वहाँ पर पंडितो द्वारा स्वस्तिवाचन किया गया। यजमान कांतिभाई केशरा भूडिया (फोटडी-कच्छ) द्वारा पू. लालजी महाराजश्री का पूजन अर्चन किया गया था। साथ में विद्यार्थी संत तथा बाल युवक मंडल ने भी समूह आरती की थी। पू. महन्त स्वामी के मार्गदर्शन में पू. छोटे पी.पी. स्वामी तथा नारायणमुनिने सुन्दर सभा का संचालन किया था। बाद में आये हुये संतो ने पुष्पहार पहनाकर स्वागत किया था। अहमदाबाद मंदिर के स्कीम कमेटी के सदस्यों ने कारभारीश्री, अग्रगण्य हरिभक्त, युवक मंडल, बाल मंडल ने भी पुष्पहार पहनाकर स्वागत किया था। आज सभा में छोटे सन्त नारायण मुनिने चैतन्य स्वामीने, भक्तिनन्दन स्वामी, सत्यप्रकाश स्वामी ने पू. लालजी महाराजश्री के प्रति निष्ठा का भाव व्यक्त किया था। कितने बालक तो कीर्तन गाकर

अपने भाव व्यक्त किये थे।

अन्त में प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्रीने धर्मकुळ के प्रेमी संतो हरिभक्तों को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। समग्र प्रसंग में पू. महंत स्वामी की प्रेरणा से पार्षद दिगम्बर भगतने, जे.के. स्वामीने, बलदेव स्वामी, नटु स्वामी, राम स्वामी इत्यादि संतो ने खूब सेवा की थी। श्री नरनारायण युवक मंडल की सेवा प्रेरणा रुप थी।

अन्तमें गाँव-गाँव से पधारे हुये सन्त-हरिभक्त पू. लालजी महाराजश्री को पुष्पहार पहनाकर प्रसाद लेकर स्वस्थान प्रस्थान किये थे। - शा.स्वा. नारायणमुनिदास

अमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में भव्य झूलोत्सव

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा कालूपूर मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी श्री नरनारायणदेव के समक्ष भव्य झूले पर प्रभु को सजाकर झुलाया गया था। आषाढ कृष्ण द्वितीया से श्रावण वद द्वितीया तक नाना विधपदार्थो से झूले को सजाकर (काजू-बदाम, फूल, चोकलेट, मोळी, झरी) इत्यादि पदार्थो से 'अलंकृत करके सायंकाल ५-३० से ७-३० तक ठाकुरजी को झूले में बैठाकर झूलाया जाता था। श्रावण मास में ऐसे अलौकिक दर्शन करने का लाभ लेकर सभी धन्यता का अनुभव किये थे। झूले को सजाने का कार्य पार्षद दिगम्बर भगत, जे.के. स्वामी, नटु स्वामी, बलदेव स्वामी, हरिचरण स्वामी इत्यादि लोगोंने किया था। श्रावण मास में सभा मंडप में कथा का आयोजन किया गया था। जिसमें प्रातः ७-३० बजे से ८-१५ तक शिक्षापत्री भाष्य की कथा स्वा. नारायण मुनिदासजी तथा सायंकाल ६-४५ से ७-३० तक भागवत दशम स्कन्धकी कथा स्वामी धर्मजीवनदासजी करते थे। इस तरह यहाँ के मंदिर में श्रावण मास के अलौकिक भक्तिमय वातावरण बना रहता है जिसका दर्शन करके भक्तजन आनंदका अनुभव करते हैं। - को. जे.के. स्वामी

न्यु राणीप में ११ वीं सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स्वा. देवप्रकाशदासजी एवं छोटे पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंत) की प्रेरणा से न्यु राणीप विस्तार में बूट भवानी माता के प्रांगण में १५-७-१२ को प.पू. आचार्य महाराजश्री के सानिध्य में ११ वीं सत्संग सभा सम्पन्न हुई।

सभा के यजमान श्री प्रकाशभाई पुरुषोत्तमभाई पटेल (दासभाई) थे। सभा के प्रसंग में स्वा. सिद्धेश्वरदासजी ने तथा अभय स्वामीने कथा का लाभ दिया था। बाद में पू. आचार्य महाराजश्री के आगमन पर उनका पूजन अर्चन तथा आरती उतारकर यजमान परिवार ने आशीर्वाद प्राप्त किया था। सभा में पू. महंत स्वा. हरिकृष्णदासजीने तथा स्वा. निर्गुणदासजीने भगवान का माहात्म्य समझाया था। अन्त में पू. महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था।

इस प्रसंग पर पू. महाराजश्रीके साथ नारायणमुनि स्वामी, ब्रज भूषण स्वामी, दिव्यप्रकाश स्वामी, कुंजविहारी स्वामी पधारे थे।

श्री नरनारायणदेव युवक मंडल न्यु राणीप की सेवा सराहनीय थी। - स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी

विजापुर में (वजीबा का घर) प्रसादी की जगह पर जीर्णोद्धार हेतु सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा नारायणघाट मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से विजापुर गाँव में ता. १५-७-२०१२ को सत्संग सभा हुई थी।

विजापुर गाँव में कुल ११ वार श्रीहरि पधारे थे। और मुक्तस्वरुपा बजीबा के घर अनंत लीलायें किये थे। ऐसे प्रसादी के गाँव में प.पू. महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे। उस समय वहाँ पर गाँव के लोगो ने तथा अगल-बगल के गाँव के लोगो न सुन्दर सभा का आयोजन किया था। सभा के मुख्य आयोजक यजमान श्री गुणळंतभाई पटेल ने प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्चन किया था।

सभा के प्रारंभ में श्री जयंतीभाईने सुंदर प्रवचन किया था। स्वा. सिद्धेश्वरदास, स्वा. अभयप्रकाशदास ने धर्मकुल का महत्व समझाया था। प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से प्रसादी की जगह का जीर्णोद्धार करने की घोषणा की गयी - घोषणा सुनते ही बहुत सारे भक्तों ने भेंट को उसी समय लिखवाया था। महाराजश्रीने सभी को जीर्णोद्धार करने की आज्ञा भी देदिया। बाद में चैतन्य स्वामीने प्रसादी के उस स्थान का महत्व समझाया था। प.पू. महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था।

प.पू. महाराजश्री के सेवा में को. जे.के. स्वामी - नारायण स्वामी, कुंजविहारी स्वामी, व्रजभूषण स्वामी थे।

विजापुर के युवकों की सेवा सराहनीय थी।

- शा. व्रजभूषणदास

कुबडथल में होमात्मक महापूजा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से कुबडथल गाँव में श्री जीगरभाई के नूतन फार्म हाउस में नव निर्मित भवन में होमात्मक महापूजा का आयोजन किया गया था। इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री आशीर्वाद देने के लिये पधारे थे। इस अवसर पर श्री जीगरभाई दीपकभाई पटेलने प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्चन किया था। इस प्रसंग पर अमदावाद के महंत स्वामी, कांकरिया मंदिर तथा जेतलपुर के महंत स्वामी संत मंडल के साथ पधारे थे। सर्व प्रथम प.पू. आचार्य महाराजश्रीने महापूजा की पूर्णाहुति की थी। श्री जिगरभाई तथा उनके पिताजी एवं पुत्र प.पू. महाराजश्री का पूजन अर्चन किया था। बाद में सभी आगन्तुक संतो का पूजन किया गया। आमंत्रित मेहमानो को खाने-पीने की सुन्दर व्यवस्था की गयी थी। इस प्रसंग के प्रेरक आनंद स्वामी थे। - जिगर पटेल, कांकरिया

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणपुरा में श्रावण मास में कथा पारायण समूह महापूजा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा नारायणपुरा मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से एवं यहाँ के हरिभक्तों के सहकार से सत्संग प्रवृति के विकास के लिये प्रति शनिवार को रात्रि में ८-०० बजे से १०-०० बजे तक सभा का आयोजन होता है। जिसमें करीब २०० युवक-युवती उपस्थित रहते हैं। जिसमें श्री नरनारायणदेव तथा संप्रदाय की प्रतिष्ठा में वृद्धि हो ऐसी प्रवृति की जाती है। बच्चों के विकास के लिए सुबह ११ से १ तक सभा प्रवृति की जाती है. जिसका आरंभ जुलाई के प्रथम शनिवार को किया गया था। जिस में प्रसाद के यजमान प.भ. जयंतीभाई पटेल (नेशनल टांकी वाले) थे। १५०० भक्तों ने कथा वार्ता तथा देव आचार्यश्री की महिमा - माहात्म्य का ज्ञान दिया। वैशाख ज्येष्ठ महीने में बाल स्वरुप घनश्याम महाराज का अद्‌भुत चंदन चर्चित के दर्शन पुजारी स्वामी द्वारा करवाये गये। प.भ. कौशिकभाई पाटडीया केशर स्नान के यजमान थे। महंत स्वामी ने प्रातः एक घंटे तक सभा में कथा द्वारा मूल संप्रदाय तथा नियम, निश्चय के साथ उपदेशात्मक कथा का लाभ दिया। सावन महीने में कलात्मक झूलोत्सव के दर्शन का लाभ प्राप्त करवाया। जिस में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा प्रशंसनीय थी।

पवित्र सावन महीने में ज्ञान सत्र अंतर्गत श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण ता. ८-८-१२ से ता. १५-८-१२ तक महंत शा.स्वा. हरिॐप्रकाशदासजी के वक्तापद पर समग्र धर्मकुल के सानिध्य में तथा प.भ. दशरथभाई प्रहलादभाई पटेल (जमीयतपुरावाले) अहमदाबाद, मंदिर स्कीम कमिटी सदस्य, परिवार के यजमान पद पर होगी। अधिक पुरषोत्तम महीने में आने वाले उत्सवों को धूमधाम से मनाया जायेगा। श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण महंत स्वामी के वक्तापद पर होगी।

जिस के यजमान पद का लाभ प.भ. अंबालालभाई मगनभाई पटेल (सोलावाले) परिवार लेंगे।

इस प्रसंग पर समग्र धर्मकुल आशीर्वाद का अलौकिक लाभ प्रदान करेंगे। सभी हरिभक्तों से लाभ लेने हेतु अनुरोधहै। - शा.स्वा. माधवप्रसाददास

श्री स्वामिनारायण मंदिर मथुरा २३ वाँ पाटोत्सव तथा गुरुपूर्णिमा महोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा मथुरा महंत शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजी की प्रेरणा से प.भ. भगवानभाई अंबालाल पटेल ह. चि. पुत्र निमेषभाई (चांदखेडा वाले: के यजमान पद पर मथुरा मंदिर का २३ वाँ पाटोत्सव वैशाख शुक्ल पक्ष-१० को ता. १-५-१२ को विधिपूर्वक मनाया गया था।

इस प्रसंग पर ठाकुरजी की महापूजा का आयोजन किया गया था। वैशाख शुक्लपक्ष-१० प्रातः ठाकुरजी का षोडशोपचार अभिषेक को. स्वा. सर्वेश्वरदास, पू. बलु स्वामी, शा. सुखनंदनदास, पूजारी विश्वेश्वरदास तथा श्रीजी स्वरुप स्वामीने किया था। महापूजा तथा अभिषेक विधिमहंत स्वामीने करवाई थी।

ठाकुरजी को सुंदर छप्पन भोग अन्नकूट रसोईया महाराज तथा संत मंडलने तैयार किया था। साथ में महंत स्वामीने यजमान परिवार को सेवा का लाभ दिया। सभा संचालन शा. सुखनंदनदासने किया था। महंत शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजी के निर्देश में श्री नरनारायणदेव युवक मंडलके युवकोने तन, मन, धन से सेवा की।

आषाढ शुक्लपक्ष-१५ गुरु पूर्णिमा के पावन प्रसंग पर

स.गु. महंत शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजीने गुरु पूजन का सुंदर आयोजन किया था । इस प्रसंग पर श्रृंगार आरती के बाद सभा में प.पू. महाराजश्री की प्रतिकृति का विधिपूर्वक पूजन किया गया था । संतो का भी हरिभक्तों ने पूजन किया था । इस प्रसंग पर भोजन का आयोजन किया गया था । जिस में गिरिनारी स्वामी, को. सर्वेश्वरदास, सुखनंदनदास, इत्यादि संतोने सुन्दर सेवा की थी ।

– पूजारी विश्वेश्वरदास, रवीन्द्र भगत

श्री स्वामिनारायण मंदिर साणंद का पाटोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा वयोवृद्ध संत संतोषानंदजी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर का ३६ वाँ पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था ।

पाटोत्सव के प्रसंग पर अन्नकूटोत्सव तथा श्री सत्संगिभूषण पंचान्ह कथा घनश्याम स्वामीने की थी । सां.यो. गीताबा के मार्दर्शन में महिला सत्संगशिबिर का भी आयोजन किया गया था । ता. २३-६-१२ को महिलाओं की गुरु प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी । बहने दर्शन करके अपने जीवन को धन्य समझा ।

ता. २६-६-१२ को प.पू. आचार्य महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे । प्रथम ठाकुरजी के २३ वें पाटोत्सव को सम्पन्न करके हरिभक्तों को हार्दिक आशीर्वाद दिये । पाटोत्सव के तथा पारायण के यजमान श्री छोटालाल लालजीभाई परिवार की तरफ से चंदूलाल महेशभाईने लाभ लिया था ।

इस प्रसंग पर कोटेश्वर से पी.पी. स्वामी जमीयतपुरा से माधव स्वामी, चंद्रप्रकाश स्वामी, भक्ति स्वामी, कुंजविहारी स्वामी इत्यादि संत पधारे थे । यहाँ के युवक मंडल की सेवा सराहनीय थी ।

– को. साणंद

श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा गुरुपूर्णिमा - गुरुपूजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से माणसा मंदिर में गुरु पूर्णिमा को सभा में घनश्याम स्वामी के शिष्य गवैया प्रकाश स्वामी, हरिभक्त नारायणभाई, केशाकाका इत्यादि लोगोंने महाराजश्री के फोटो का पूजन-अर्चन किया था ।

– श्री नरनारायण युवक मंडल, माणसा

हिंमतनगर मंदिर में स्वा. ब्रह्मानंद के १०१ कीर्तन का गायन

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी की आज्ञा से हिंमतनगर की महिला मंडल ने ब्रह्मानंद स्वामी के १०१ कीर्तनो का गायन किया था । शिल्पाबहन तथा संगीता बहनने यजमान पद का लाभ लिया था । राधाष्टमी के दिन अहमदाबाद में श्री स्वामिनारायण म्युजियम के महापूजा का आयोजन किया गया था । प्रबोधिनी एकादशी को रात्रिजागरण किया गया था ।

– भावना बहन

घाटलोडिया मंदिर में नियम एकादशी को नियम लिया गया

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वाद से यहाँ के मंदिर में महिला मंडल की ७० जितनी बहनोने ता. ३०-६-१२ को चातुरमास का विशेष नियम लिया था । बहने प्रति एकादशी को सत्संग सभा का आयोजन करती हैं । वीणाबहन शनाभाई पटेल की तरफ से चातुरमास में वांचने के लिये शिक्षापत्री की भेंट दी गयी थी । इस तरह घाटलोडिया मंदिर में सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चलती है ।

– प्रविणभाई टी. पटेल

धर्मकुल आश्रित श्री नरनारायणदेव मंडल (वाली राज.) (वर्तमान में मुंबई) का तृतीय वार्षिक पाटोत्सव

भगवान की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाहाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से धर्मकुल आश्रित भक्तों के सहयोग से सत्संग मंडल वाली (राज.) वर्तमान में मुंबई का तृतीय वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया गया था ।

इस प्रसंग पर प.पू. महाराजश्री संत पार्षदों के साथ रेलवे द्वारा २३-६-१२ को प्रातः ६-३० बजे वाम्बे सेन्ट्रल रेलवे पर पहुचे थे उस समय युवक मंडलने धूमधाम से स्वागत किया था । प.पू. महाराजश्रीका निवास किसनभाई के घर पर रखा गया था । वहाँ पर करीब २५ घरों में पदार्पण किये थे । किसनभाई ३१ वें मंजिल पर रहते हैं वहाँ तक सीढी से चढकर गये । लिफ्ट से नहीं गये । सभी हरिभक्त साथ में बड़े आनंद के साथ चढ गये । यहीं पर महाराजश्री के साथ संत भोजन किये । थोड़ा आराम के बाद भाइन्दर के हरिभक्तों के घर पदार्पण कार्यारम्भ किये । रास्ते में मलाड तथा अगल बगल के हरिभक्तों के यहाँ पदार्पण करते हेयु आगे बढ रहे थे

। जहाँ पर भक्तजन बड़ी श्रद्धा के साथ स्वागत करने के लिये खड़े थे।

ता. २४-६-१२ को भूलेश्वर में रहने वाले भक्तों ने वहाँ के मंदिर में पदार्पण करने की प्रार्थना की जिससे वहाँ के मंदिर में श्रृंगार आरती करने हेतु पधारे । वहाँ पर मंदिर के कोठारी स्वामी तथा अन्य संतो ने प.पू. महाराजश्री का उत्तम स्वागत किया था। यहाँ सभी को दर्शन का लाभ देकर अपने निवास स्थल पर पधारे जहाँ पर विशाल सभा का आयोजन किया गया था।

सभा में छोटे पी.पी. स्वामी, जे.के. स्वामी, नारायणमुनि स्वामी, विश्वस्वरुप स्वामीने श्री नरनारायणदेव की महिमा तथा धर्मकुल की महिमा का वर्णन किया था।

प्रातः ११-३० बजे प.पू. महाराजश्री के सभा में आगमन होते ही मंदिर के कोठारी स्वामी, मेतपुर सतसंग समाज ने बैंड पार्टी के साथ दिव्य स्वागत किया था।

प.पू. महाराजश्री मेतपुर के सभी हरिभक्तों पर खूब प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिये थे । सभी धन्यता का अनुभव किये थे। करीब २००० जितने हरिभक्त चरण स्पर्श का लाभ लिये थे। बाद में सभी भोजन का प्रसाद ग्रहण किये थे। साथ में आये हुये संतो का योग्य मार्गदर्शन मिला था। सायंकाल ५ बजे किसनभाई साली के निवास स्थान पर सभी युवक मंडल को पू. महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया, सभीने अपने जीवन को धन्य माना। वे लोग इतनी नजदीक से प्रथम वार महाराजश्री का दर्शन किये और धर्मकुल को समझ सके। वे लोग यह भी अनुभव किये कि श्री नरनारायणदेव को छोड़कर अन्यत्र जाने की जरुरत नहीं। धर्मकुल हमारा प्राण है। श्री नरनारायणदेव हम सभी के जीवन हैं। - किसनभाई माली, प्रमुख (वाली-मुंबई)

मूली प्रदेश का सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर धांगध्रा

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से ध्रांगध्रा श्री स्वामिनारायण मंदिर का १४८ वाँ पाटोत्सव मनाया गया । मूली के मंदिर में आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री के हाथों से स्वामिनारायण भगवान की प्राण प्रतिष्ठा की गई थी। इस कारण यह मंदिर चमत्कारी है। यहाँ मदंर में सेवा पूजा करने वाले पू. स्वामी भक्तिहरिदास तथा शिष्य मंडलने ठाकुरजी की आरती उतारकर हरिभक्तों को देव, आचार्यकी आज्ञा से रहने की सूचना दी। ता. १९-७-१२ को बहनो के श्री स्वामिनारायण मंदिर (धांचीवाडा) में सावन महीने में १५ कलात्मक भव्य झुलोत्सव का उद्घाटन प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्रीने अपने हाथों से विधिपूर्वक किया । कंचनबाई आदि सांख्ययोगी बाई सत्संग का दिव्य सुख हरिभक्तों को प्रदान कर रही है। - अनीलभाई दुधरेजीया, ध्रांगध्रा

श्री स्वामिनारायण मंदिर लींबडी

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से लींबडी मंदिर में महंत स्वामी भक्तवत्सलदासने गुरुपूर्णिमा को सभा में बालस्वरुप घनश्याम महाराज के समक्ष श्रीहरि की पादुका तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महारजाश्री की तसवीर का पूजन-अर्चन तथा समूह आरती की। -केनिल सोनी

श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनों का) गुंदीयाना मूर्ति प्रतिष्ठा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजी के आशीर्वाद से तथा शा.स्वा. नारायणप्रसाददासजी (पूर्व महंतश्री मूली) की प्रेरणा से स्वामिनारायण मंदिर (बहनों का) गुंदीयाला में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

इस प्रसंग में श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण स.गु.शा.स्वामी घनश्यामप्रकाशदासजी (माणसा महंत) के वक्तापद पर सम्पन्न हुई। तथा विष्णुयाग का आयोजन किया गया।

इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे तब शोभायात्रा के रुप में सुंदर स्वागत किया गया।

प.पू. आचार्य महाराजश्री नूतन मंदिर में ठाकुरजी की प्राण प्रतिठा पर आरती के बाद यहाँ की पूर्णाहुति की तथा अन्नकूटकी आरती कर कथा की पूर्णाहुति करके। सभा में बिराजमान हुये। शा.स्वा. नारायणप्रसाददासजी ने मांगलिक उद्बोधन किया । पूज्य बड़े पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) गुरुप्रसाद स्वामी, हरिॐ स्वामी, भक्तिचरण स्वामी, पी.पी. स्वामी (वडताल) प्रेमस्वरुप स्वामी, माधव स्वामी, आदि संतगण पधारे थे। यजमान परिवार तथा सेवा करने वाले हरिभक्तों को प.पू. महाराजश्री आशीर्वाद प्रदान किये।

समग्र महोत्सव का आयोजन शा.स्वा. हरिप्रकाशदासजी (मकनसर महंत)ने किया था। गाँव के

भक्तों की शेवा प्रेरणारुप थी । संतो में शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, सायला (गुरुकुल) स्वामी, स्वा. हरिप्रसाददास, आनंद स्वामी तथा राम स्वामीने सेवा की।

- अक्षर, रवि, सायला गुरुकुल

विदेश सत्संग समाचार

वोशिंग्टन डी.सी.

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से २० जून साम को ५-१५ से ९-४५ (४ घंटे) तक इस्करीझ के होल में सत्संग सभा में कथा, वार्ता, वचनामृत वाचन (२७३) धून नित्य नियम आरती की गई। कोलोनीया मंदिर में ज्ञान स्वामीने सेलफोन के माध्यम से कथावार्ता का लाभ लिया। - कनुभाई पटेल

लेस्टर मंदिर में भावि आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का १५ वाँ प्राकट्योत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की कृपा से लेस्टर (यु.के.) के श्री स्वामिनारायण मंदिर में सुंदर उत्सव मनाया गया।

श्री स्वामिनारायण मंदिर लेस्टर, इंग्लेन्ड में पूर्ण पुरुषोत्तम श्री स्वामिनारायण भगवान की असीम कृपा से तथा श्री कष्टभंजनदेव महाराजश्री की दिव्य प्रेरणा से अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव गादी के भावि पीठाधिपति प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का १५ वाँ प्रागट्योत्सव धूमधाम से ६-०० से ८-०० तक मनाया गया। हरिभक्तों द्वारा भक्ति-कीर्तन, रास-गरबा, श्री हरिपूजन का आयोजन किया गया । पू. शा.स्वा. विश्वविहारीदासजी (भुजवाले) तथा पू. स्वामी योगेश्वरदासजीने धर्मकुल तथा श्री नरनारायणदेवका माहात्म्य सुंदर कथा के स्वरुप में बताया । जन्मोत्सव का केक काटकर भव्य जन्मोत्सव मनाया गया।

इस उत्सव में हरिभक्त बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा आशीर्वाद से तथा लेस्टर मंदिर में सत्संग प्रचार के लिए पधारे प.पू. शा.स्वा. श्री विश्वविहारीदासजीने संतदीक्षा के २५ वर्ष पूर्ण होने पर तथा उनके ४५ वें जन्मदिवस पर प.पू. लालजी महाराजश्री के जन्मोत्सव की सभा में उनका लेस्टर मंदिर की कमिटी के सदस्यों तथा मंदिर के हरिभक्तों द्वारा पूजन किया गया। - किरण भावसार, सहमंत्री)

कालोनिया मंदिर में प.पू. लालजी महाराजश्री का जन्मोत्सव संपन्न

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालोनिया में १४ जुलाई शनिवार को भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पधारे थे. उनके साथ प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी, पू.श्रीराजा, पार्षद वनराज भगत, श्री सौम्यकुमार, श्री सुव्रतकुमार पधारे थे । उन्हीं की उपस्थिति में सभा का आयोजन किया गया था । जिसमें महंत स्वा. ज्ञानप्रकाशदासजी, बालक एवं युवा हरिभक्त भी सभा में उपस्थित थे। सभा में प.पू. लालजी महाराजश्री का बालकों तथा युवा हरिभक्तों ने पुष्पहार से स्वागत किया था। इसके साथ एकादशी होने से फलाहारी केक काटकर बर्थडे मनाया गया था। महंत स्वामीने भी धर्मकुल के प्रति निष्ठा रखने पर सभी को समझाया था। इस प्रसंग पर ठाकुरजी के सिंहासन को विविधरंगो से अलंकृत किया गया था। यहाँ पर रथयात्रा का उत्सव ठाकुरजी को रथ में बैठाकर आरती उतारी गयी थी । इस उपलक्ष्य में धुन-कीर्तन भी किया गया था । प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा से धर्मप्रवृति अच्छी चलती है।

अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

नवावाडज-अमदावाद : प.भ. रतिलाल गोरधनभाई पाटडिया (उ. ६९ वर्ष) ता. १७-४-१२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए।

अंबापुर (जी. गांधीनगर) : पटेल कमलाबहन रमणभाई ता. ३०-५-२०१२ को श्रीजी महाराजका अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।